श्री धन्वन्तरि भगवते नमोनमः

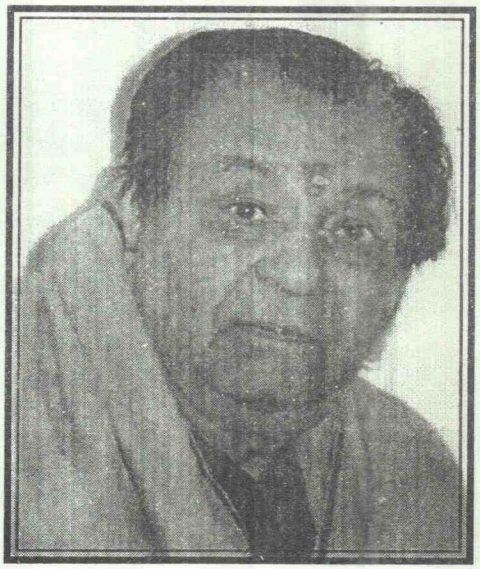
बनौषधि वाटिका के रोपण समारोह में

आयुर्वेद विश्व परिषद के संस्थापक परमाध्यक्ष

युगाचार्य

डा. आचार्य प्रभाकर मिश्र का

संकलनात्मक उद्‌बोधन



स्थानः धन्वन्तरि मन्दिर प्रतिष्ठा वनौषधि वाटिका के संस्थापन तथा
वनौषधि सम्मेलन अखिलसद्‌भावना निजात्म प्रेमधाम आश्रम
मंजेश्वर केरल दिनांक : 23, 24, 25-11-2010

आयुषोवेदः

शंखचक्र सुधाकुम्भ वनस्पतिधरं करे।
धन्वन्तरि प्रभुं बन्दे, आयुर्वेद प्रवर्तकम्।



सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः।
सर्वेभद्राणि पश्यन्तु, माकश्चित् दुःख भाग् भवेत्।।

प्रकाशक – धन्वन्तरि अखाड़ा

प्रसारक – आयुर्वेद विश्व परिषद्

www.waayurved.org, www.ayurvedvp.org
e-mail : waayurved@gmail.com,
dhanwantariakhara@gmail.com

(An NGO for popularisation of Ayurved
Income Tax Exemption u/s 80GIT Act)

प्रजापति ब्रहमा ने सर्वप्रथम वनौषधियॉ उत्पन्न कीं

वनस्पति वैज्ञानिकों तथा भारतीय शास्त्रों ने सिद्ध कर दिया है कि प्राणी सृष्टि के पूर्व ब्रहमा ने वनस्पतियों को ही जन्म दिया। क्योंकि ब्रहमा को ज्ञान था कि सृष्टि को स्वस्थ नीरोग रखने के लिए वनौषधियों की आवश्यकता है। प्रकृति की रचना के लिए भी वनौषधियों की उपादेयता है। प्रकृति की रचना का प्रारम्भ वनस्पतियों के माध्यम से ही प्रारम्भ हुआ। इसीलिए वनस्पतियॉ भारत के जलवायु तथा प्रकृति के लिए उपयोगी हैं।

इसीलिए महर्षि चरक ने स्पष्ट लिख दिया
"यस्य देशस्य योजन्तुः तज्जंतस्यौषधं हितम्"

जिस देश में जो प्राणी उत्पन्न हुआ है उस देश में उत्पन्न औषधियॉ ही हितकारी हैं। इसीलिए भगवान धन्वन्तरि जब प्रकट हुए दो अमृत लेकर निकले 1 - अमृतकलश 2- वनौषधियॉ (आयुर्वेदामृत)

चरक ने लिखा भी -

"ओषध्योऽमृतकल्पाः स्युः"

औषधियॉ भी अमृत के समान हैं।

भारतीय शास्त्रों ने वनौषधिरोपण का महान पुण्य लाभ बतलाया है।

धीरे धीरे जनसंख्या बढ़ती गई लोग आवास बनाते रहे और वनौषधियॉ लुप्त होती गई उन्हें पर्वतीय तथा पठार क्षेत्रों की ओर धकेल दिया। इनका नाम वनस्पति है अर्थात् बन की पति स्वामिनी, उन्हें निर्वासित कर दिया। पर अब जब रोगों की भरमार हो रही है तो सरकार की नींद टूटी है तथा जन जागरण भी हुआ है। जगह जगह वनौषधि वाटिकाएँ लगाई जा रही हैं। अनुसन्धान तथा वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण के भी प्रयत्न हो रहे हैं। परन्तु यह अभियान तब पूरा होगा जब किसान जड़ी बूटियों की खेती करना प्रारम्भ करेगा।

वस्तुतः किसानों को वनस्पति कृषि के लाभों तथा तरीकों का ज्ञान नहीं हो पा रहा है। सरकार ने प्लांटेशन बोर्ड की भी स्थापना की है। वनस्पतियों पर अनुसंधान भी हो रहे हैं परन्तु परिणाम किसानों तक नहीं पहुँच पा रहे हैं। वस्तुतः केन्द्र सरकार में स्वतंत्र वनौषधि कृषि विकास मंत्रालय की स्थापना जरूरी है जो केवल वनस्पति कृषि को प्रोत्साहित तथा विकसित करे।

वनस्पति कृषि भारत के लिए वरदान सिद्ध हो सकती है राजस्व की वृद्धि के साथ किसानों के लिए लाभप्रद है। किसानों को वनस्पति उत्पादन से अधिक लाभ मिलेगा। आयुर्वेद विश्व परिषद् इस वनौषधि अभियान के लिए कृत संकल्प है।

मैं वनौषधि सम्मेलन तथा वनौषधि वाटिका के निर्माण करने के लिए आयोजकों को धन्यवाद देता हूँ ।

जय आयुर्वेद !

भवदीय,

आचार्य प्रभाकर मिश्र
सी- 121, कीर्ति नगर, नई दिल्ली -110015 मो- 09818066603

स्वास्थ्य रक्षक तथा आयुर्वेद की प्राण बनौषधियॉ

प्रारम्भ से ही भारत एक वनौषधि प्रधान देश है। यहां पर विभिन्न प्रकार की जलवायु एवं भौगौलिक परिस्थितियों के आधार पर विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां मिलती है । सब औषध वनस्पति एक जगह पैदा नहीं होती जैसे उड़ीसा में कुचला के जंगल है, राजपूताना में इन्द्रवारूणी बहुत मिलती है तथा नेपाल की तराई में कुटकी, अम्लवेत, चिरायता, पीपरामूल बहुलता से मिलती है। कुछ लोगों का मानना है कि आसाम, बंगाल, उड़ीसा आदि अनूप देश की औषध वनस्पति गुणों में कमजोर होती है। बिहार नेपाल एवं विन्ध्याचल में उगने वाली वनस्पति मध्यम श्रेणी की होती है। उ. प्र. पंजाब एवं राजपूताना हिमाचल में उत्पन्न औषध ठीक होती है। हिमालय के अतिरिक्त भी औषधि पैदा होती है,परन्तु हिमालय की ब्राहमी के गुण का मुकाबला कोई नहीं कर सकता। भारत वर्ष में मुसलमानी राज्य स्थापित होने पर अफीम का उपयोग चिकित्सा में अधिक होने लगा तथा अरब एवं अफगानिस्तान में पाई जाने वाली वनस्पतियों को भी चिकित्सा में शामिल किया गया।

आज सैकड़ों ऐसी वनस्पतियां भी भारत में पाई जाती है जिनका उल्लेख ग्रन्थों में नहीं है। परन्तु बनेचर जनसमुदाय, आदिवासी इन्हें औषध के रूप में प्रयोग करते हैं। इन्द्रायण की जड़ से प्लेग की गांठ की चिकित्सा, बिच्छू के काटने पर गुलतर्रा वृक्ष की जड़ का उपयोग, इसी प्रकार बंगाल के लोग बक्खो नामक वनस्पति जो पाताल गारूडी के समान होती है, सांप के काटने पर सफल इलाज करते हैं। बक्खो को रक्त पित्त, खून रोकने के लिये बखूबी प्रयोग वहां की जनजाति करती है। नर्मदा के किनारे गौला नाम की वनस्पति होती है जो पानी में डूबे मनुष्य को मृत्यु के मुख से बचाती है। नेपाल व भूटान के बीच एक विखमा नामक बूटी है जो बेहोश को होश में लाने के लिए प्रयोग होती है। इस प्रकार की जड़ी बूटियों को यदि जंगली जन जातियों से मिलकर संकलित किया जाये तो औषध वनस्पति शास्त्र में एक नया युगान्तर होगा।

अंग्रेजी शासन में भारतीय वनस्पति औषध की वैज्ञानिकता को सच्चे दिल से स्वीकार किया गया। प्रसिद्ध वनस्पति शास्त्री विलियम जेम्स ने भारत की औषध वनस्पतियों को अपने ग्रन्थ में प्रकाशित किया। इसके पश्चात् बैरिग के द्वारा सम्पादित फार्मोकोपिया ऑफ इडिया प्रकाशित हुआ। इसी प्रकार जड़ी बूटियों पर सैकड़ों ग्रन्थों की रचना वनस्पति शास्त्रियों ने की। आजादी के बाद इस क्षेत्र में सर्वतोमुखी विकास हुआ है। रसायन शास्त्री, वनस्पतिशास्त्रियों ने अपने योगदान से इसे पोषित किया है परन्तु अभी भी आवश्यकता है इसके ज्ञान को जन-जन तक पहुॅचाने की।

यद्यपि वनस्पति विज्ञान का गहन अध्ययन एवं सर्वेक्षण न केवल हमारे देश वरन् विदेशों में भी कर बोटनीकल फलोराओं का निर्माण किया गया है परन्तु इसके बावजूद हमें इससे परम्परागत औषधि द्रव्यों के उपयोग को भी जन-जन तक पहुंचाना होगा। खेतों में उगने वाले खरपतवार जिन्हें मनुष्य व्यर्थ समझ कर फेंक देता है उसकी चिकित्सा मूल्यों को एवं उनकी उपयोगिता को भी किसानों को बताना होगा। जैसे पित्त पापड़ा, पुनर्नवा खरेटी, गोखरू, कटेली, मकोय, असगन्ध, आक अपामार्ग, स्वर्णक्षीरी, पाषणभेद आदि।

दिन प्रतिदिन बढ़ता प्रदूषण एवं जंगलों की कटाई से वानस्पतिक औषध द्रव्यों के स्त्रोत कम होते जा रहे है। अपने देश व विदेशों में भी जड़ी बूटियों की खपत बढ़ती जा रही है। इससे भी औषध द्रव्य लुप्त होते जा रहे है। इसके लिए भारत के किसानों द्वारा जड़ी-बूटी की खेती कराई जानी चाहिए। परन्तु इस सम्बन्ध में भी ध्यान रहें कि किसानों को उचित आर्थिक लाभ होगा तभी वे इस कार्य की ओर प्रेरित होंगे साथ ही इस कार्य में पिछड़ी जन जाति एवं आदिवासियों को रोजगार उपलब्ध होंगे।

हिमाचल प्रदेश में तराई प्रदेश में मैदान एवं पठार प्रदेश में, रेगिस्तान एवं उष्ण कटिबन्ध प्रदेश में एवं दक्षिण के जलीय प्रदेश में होने वाली वनस्पतियों की जानकारी किसानों को दी जाये तथा उन्हें निःशुल्क पौध एवं बीज उपलब्ध कराये जाये। और उनके रोपण एवं रख रखाव, सिंचाई एवं खाद का प्रशिक्षण दिया जाये तथा उसके एकत्र करने का भी ज्ञान दिया जाये। इसके साथ-साथ जड़ी बूटी के उत्पादन की नई-नई वैज्ञानिक तकनीकी को विकसित किया जाये। वन विभाग के आंकड़ों के अनुसार लुप्त प्रायः वनस्पतियाँ जैसे-अतीस, जटामासी, सालमिश्री, सोमलता, रेवन्दचीनी, महामेदा, पत्थर लौंग आदि को नई कृषि तकनीकी द्वारा सुरक्षित रखना होगा। इस कार्य के लिए कृषिशास्त्री, वनस्पतिशास्त्री, रसायनशास्त्री एवं आयुर्वेद शास्त्री के परस्पर सहयोग एवं परामर्श जरूरी है।

किसान भाई खेतों में सरलता से - अश्वगन्धा, सर्पगन्धा, सफेदमूसली, स्टीविया, ग्वारपाठा, हल्दी, शतावरी, सनाय, ईसबगोल, बिदारीकन्द, पिपरमेन्ट, जीरा, सौफ, अजवाइन, पिप्पली, चिरायता, भृंगराज आदि की उगाई कर सकते हैं औषधपादप लगा सकते हैं।

माइकोराईजा - औषधीय पौधों की जैविक खेती के लिए एक वरदान

आयुर्वेद जीवन का विज्ञान भारतीय ऋषियों व मनीषियों ने जो अपने समय के महान वैज्ञानिक थे, मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए बहुत कुछ लिखा। पुरातन इसी जगह पर उसका प्रचलन रहा और अब इस ज्ञान को मनुष्य के चिकित्सा विज्ञान की जननी माना जा रहा है। हालाँकि कुछ वर्ष पूर्व तक भारतीय औषधि पद्धति को अल्टर्नेटिव सिस्टम आफमेडिसिव कहा जा रहा है परन्तु आयुर्वेद तो उतना ही पुराना है जितनी मानव सभ्यता। विश्व की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या अभी भी अपने स्वास्थ्य की देखभाल पारंपरिक चिकित्सा पद्धति जो कि पूर्णतया जड़ी बूटी पर आधारित है, से ही करती हैं। अब एक रोग क्रान्ति सी आ रही हैं पश्चिम में एक रोग ठीक होता है तो दूसरा पैदा हो जाता है। आयुर्वेद के वैश्वीकरण का समय आ रहा है। सभी आयुर्वेदिक पद्धति से रोगों का उपचार करना चाहते है। डब्लू.एच. ओ. ने सबके लिए 2000 तक स्वास्थ्य की कल्पना में असफलता प्राप्त की क्योंकि आधुनिक चिकित्सा पद्धति के द्वारा आप प्रत्येक प्राणी को स्वास्थ्य प्रदान नहीं कर सकते है। और आखिरकार डब्लू. एच.ओ. ने भी माना कि यदि प्रत्येक मानव को स्वास्थ्य प्रदान करना है तो वह केवल आयुर्वेद के द्वारा ही किया जा सकता है। आज विश्व स्तर पर प्रतिवर्ष इस रूझान को देखते हुए, लगभग 60 हजार करोड़ रुपये का व्यापार इन्हीं जड़ी बूटियों का होता हैं और खेद की बात है कि इस विश्व स्तरीय व्यापार में भारत का योगदान केवल मा. 0.85 प्रतिशत ही रहा। विश्व मण्डी में इस व्यापार पर चीन का पूरा प्रभुत्व है क्योंकि बड़े अच्छे ढंग से चीन ने विश्व में अपने चाइनीज सिस्टम आफ मैडीसिन को लोकप्रिय किया। इसी चीनी पद्धति में कई औषधियां आयुर्वेद की हैं। 800 वर्ष की लम्बी कहानी रही हैं इस भारत की परतन्त्रता की। जिसमें शासकों ने भारत की इस अति पौराणिक और बड़ी आसान पद्धति को पनपने नहीं दिया, कुछ कुशल वैद्यों और संस्थाओं के द्वारा इस विज्ञान को जीवित रखा गया। बाहरी हमलावरों ने साहित्य को जलाया परन्तु फिर भी यह विज्ञान गुरु से शिष्य पिता से पुत्र तक पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ता गया और अभी तक जीवित है। विश्व स्तरीय व्यापार को देखते हुए और क्योंकि पृथ्वी पर भारत वर्ष में इन औषधीय पौधों की जातियों की सबसे ज्यादा संख्या है और यहां के अलग-अलग जलवायु होने के कारण इन औषधीय पौधों की खेती बड़ी ही आसानी से हो सकती है, भारत सरकार की तरफ से किसानों द्वारा इनकी खेती करने के लिए प्रोत्साहन दिया जा रहा है। आज भारतीय किसान के सामने एक बड़ा दायित्व है, एक चुनौती है कि जिन खेतों में वह आज तक गेहूं-चावल-ज्वार-बाजरा तिलहन लगाता आया है उसके कुछ भाग में कुछ चुनी हुई

औषधि खेती करे ताकि वह किसान जो आज तक अन्न पैदा कर रहा है वह मनुष्य को अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करने में भी योगदान कर सकता है इन औषधीय पौधों की खेती करके अधिकतर औषधीय पौधे प्रकृति की गोद में जंगलों में से ही आते हैं और उनका दोहन होता आ रहा है। धन के लोभ में इस वन सम्पदा को खत्म किया जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप कुछ एक जड़ी-बूटियां तो बिल्कुल समाप्ति की कगार पर आ चुकी है। पिछले 60-70 वर्षों में बहुत ही कम प्रयास हुए कि इन लुप्त हो रही वन सम्पदा की खेती करके बचा कर रखा जाए। जब इन पौधों की खेती करनी होगी तो इनकी जैविक खेती ही करनी होगी क्योंकि ये पौधे तो एक रोगी को स्वास्थ्य लाभ के लिए उपयोग मे आने है और अन्य अन्न फलों सब्जियों की तरह इनको भी यदि यूरिया डी.ए.पी. कृषि रसायन से पैदा किया जो इनमें रसायनिक खाद कृषि रसायनों के अवशेष होगे जो कि जहर है, तब तो रोगी पुरुष कैसे स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकेगा। अतः जहां प्रकृति में ये पौधे जैविक ढंग से उगते है इनकी खेती, करते समय भी किसानों को जैविक खादों का ही प्रयोग करना होगा। सन् 2004 से डब्लू.टी.ओ. के नियमों के अनुसार विश्व बाजार में केवल वही औषधीय पौधे बिक पाएंगे जो कि जैविक खेती पर आधारित होंगे। इन सबको प्रयोगशालाओं के परीक्षणों से गुजरना होगा। अभी से भारत के किसानों को तैयार होना पड़ेगा।

प्रकृति ने इन्ही पौधों को वनों में उगने के लिए ना जाने नाना प्रकार के सूक्ष्म जीवों को मिट्टी में पैदा कर रखा है जो कि जड़ों के आस-पास के क्षेत्र में सक्रिय रहते है। इन्हीं सूक्ष्म जीवों पर सूक्ष्म जीव वैज्ञानिकों ने बहुत ज्यादा अनुसंधान किया ताकि इनको प्रयोगशाला में इनके अधिक संख्या में बना कर फिर से जमीन में डाला जाए ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति बनी रहे। और इस परिणाम स्वरूप जैविक खादों का प्रचलन शुरू हुआ। अभी तक किसान राइजाबियम से काफी जानकार हो गए हैं क्योंकि दलहनी फसलों में ये बैक्टीरिया जो की वायुमन्डल की नाइट्रोजन को सीधे पौधों के लिए उपलब्ध करवा कर अधिक उपज में लाभदायक सिद्ध होते हैं। आज से 20-30 साल पूर्व जो अनुसंधान हमारे कृषि विश्वविद्यालयों में राइजाबियम पर शुरू हुआ आज वह किसानों तक पूरी तरह पहुंच चुका है और आपको यूरिया की आवश्यकता नहीं। प्रकृति में पौधों की जड़ों और इन सूक्ष्म जीवों के बीच एक विशेष प्रकार का सम्बन्ध है। और इसी सम्बन्ध को माइको राइजल कहते हैं। और बहुत कम तरह के सूक्ष्म जीव इसको निभा पाते हैं। इसी सम्बन्ध में एक विशेष प्रकार का सूक्ष्म जीव है माइकोराईजा फफूँद जड़ यानि पौधे की जड़ व फफूँदी में सम्पर्क। दोनों में गहरा रिश्ता। इसी रिश्ते से पौधे को बहुत लाभ होता हैं। जड़ों के आसपास के क्षेत्र में जमीन में अनेक प्रकार के सूक्ष्म जीव जैसे बैक्टीरिया, फफूँद और नीमेटोड होते हैं।

जड़ के क्षेत्र में जो बैक्टीरिया क्रियाशील रहते हैं उनमें एजाट्रोफस जैसे ऐजास्प्रीलियम, ऐजाबेक्टर, ब्राडीजाटियम, राइजाबियम और फास्फेट घोलने वाले बैक्टीरिया का नाम अधिक जाना जाता है और कृषि में इनका उपयोग दिन प्रतिदिन जैविक खेती करने वालों में अधिक लोकप्रिय होता जा रहा है क्योंकि प्राइवेट कम्पनियों द्वारा इनका व्यवसायिक स्तर पर बनाना शुरू हो गया है। यह दुःख की बात है कि आम भारतीय किसान इनका प्रयोग नहीं कर रहा क्योंकि उसके लिए एक बैग यूरिया लाना बड़ा आसान है क्योंकि हर गांव में वह मिल जाता है जबकि हर गांव में जैविक खाद नहीं पहुँच रही। जहां वह बनती है केवल उसी क्षेत्र में किसान उसका फायदा उठा रहे हैं। एक बड़ी कठिनाई- ये जैविक खाद 6 महीने के अन्दर प्रयोग में लाने पड़ते हैं। यह भी दुर्भाग्य है कि जैविक खाद बनाने वाली कंपनियों को भी बहुत ईमानदार होना होगा कि वे किसानों को ठीक माल दे नाकि एक साल पुराना पैकेट पकड़ा दे।

किसान हमेशा चाहता है कि उसकी फसल अच्छी हो। अभी तक यूरिया- डी.ए.पी. डाल-डाल कर किसानों ने जमीन की उर्वराशक्ति को समाप्त कर दिया है। सभी जमीनें क्षारीय होती जा रही हैं। माइकाफलोरा यानि की सूक्ष्म जीव जमीन के खत्म होते जा रहे है जो कि उर्वराशक्ति को बनाए रखते हैं जो कि, गोबर की खाद से प्राप्त होते है। इसको बनाए रखने के लिए फिर से हमें वैदिक काल में की जाने वाली जैविक खेती पर जाना होगा जो कि 1950 तक किसानों द्वारा की जाती रही है। धीरे-धीरे यूरिया-डी.ए.पी छोड़ने होगे ताकि फिर से ताकतवर अनाज पैदा हो, ताकतवर सब्जियां, फल व दालें पैदा हों। वैम के प्रयोग से रसायनिक खादों की मात्रा घट जाती है जमीन की ताकत बनी रहती है।

प्रति एकड़ माइकाराइजा को 4-5 किलोग्राम तक मिलाया जा सकता है। खेती की तैयारी करते समय यदि प्रति एकड़ पौधों की संख्या 40 हजार से कम हो तो 100-200 किलो ग्राम गोबर की खाद में 4-5 किलोग्राम माइकोराइजा मिलाकर सारे खेत में बिखेर कर कल्टीवेटर चला कर मिला दिया जाता हैं। खेत की तैयारी के बाद पौधों का रोपण या बीजाई की जा सकती हैं। यदि पौधों की प्रति एकड़ संख्या 40,000 से ज्यादा हो तो 5-10 किलोग्राम माइकोराइजा डाला जा सकता है। यदि पौधे से पौधे की दूरी ज्यादा हो तो रोपण करते समय तैयार खेत में खुरपे से छोटा सा खड्डा बनाया जाता है उसमें 1-2 ग्राम माइकोराईजा मिला कर ही पौध रोपण किया जा सकता है। यदि फलदार वृक्षों का बाग लगाया हो तो रोपण करते समय 3'X3' का जो खड्डा तैयार किया जाता है तो प्रति खड्डा 5 ग्राम माइकोराईजा खड्डे के मध्य में 3-4" की गहराई पर मिलाकर ही पौधों का रोपण करे।

लुप्त होती जा रही हिमालय की दिव्य औषधियाँ :-

हिमालय क्षेत्र में जो वनस्पतियां उत्पन्न होती है उनमें अनेक उद्‌भुत गुण रहते हैं। ऐसे विशिष्ट गुण वाली वनस्पतियां पृथ्वी पर अन्यत्र नहीं उगतीं। हिमालय में सैकड़ो की संख्या में ऐसी विशिष्ट जड़ी-बूटियां स्वतः उग आती हैं जिनमें अनेक असाध्य समझे जाने वाले रोगों को ठीक करने की शक्ति निहित रहती है। इसलिए इन जड़ी-बूटियों का उपयोग सदियों से भारत, तिब्बत से लेकर चीन, मंगोलियां और पूरी दुनियां में अनेक रोगों के उपचार में सफलतापूर्वक किया जाता है। इनमे से कुछ जड़ी-बूटियाँ तो इतनी विशिष्ट हैं कि वह सिर्फ हिमालय के बर्फीले इलाकों में ही पैदा हो पाती हैं। वह अन्यत्र कही भी जिन्दा नहीं रह पातीं।

हिमालय की अधिक ऊंचाई वाले बर्फीले भाग में ऐसी जड़ी-बूटियां पायी जाती हैं, जिनकी 2-4 पत्तियां खा लेने भर से ही कई दिनों से लेकर कई हफ्तों तक भूख परेशान नहीं कर पाती और ना ही किसी प्रकार की शारीरिक या मानसिक थकावट ही महसूस होती है। इन जड़ी-बूटियों के सहारे ही हिमालय के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में साधना करने वाले योगी और साधक जिन्दा और स्वस्थ बने रहते हैं। वहाँ उगने वाली इन जड़ी-बूटियों में एक ही विशेषता रहती है कि यह साधक को नींद और थकावट की परेशानी से भी बचाये रखती है। यहाँ 84 सिद्धों नाथ समप्रदाय के योगियों के स्थान हैं उनकी सिद्धि में यहाँ की दिव्य वनस्पतियों का भी सहयोग रहा है।

हिमालय में उगने वाली मानकंद, ब्रह्मकमल, सूर्यगंधा, रूद्रवन्ती, हिमालय जिनसिंग कही जाने वाली क्षीर काकोली, संजीवनी, सूर्यवल्ली, सोमलता, काला मोंगरा, पीली मूसली, लघिमा, गरिमा, सालबदाना, भूतकेशी, केशर, पागल बूटी, लक्ष्मणा, लविंगा आदि तो कुछ ऐसी जड़ी-बूटियां है, जिनका उपयोग अब अनेक रोगों के उपचार में सफलता पूर्वक किया जाता है और इसीलिए अब बहुतायत से काम में आने के कारण इन विशिष्ट जड़ी-बूटियों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। इतनी अधिक संख्या में इन्हे उखाड़ा जा रहा है कि आगे के चार-छः वर्षो में ही यह पूरी तरह से समाप्त हो सकती है यद्यपि अब इन्हें मैदानी भागों में ही कृत्रिम तरीको से उगाने के प्रयास किये जाने लगे हैं। लकिन देखने में ऐसा आ रहा है कि मैदानी क्षेत्रों में उगने वाली इनकी प्रजातियों की गुणवत्ता हिमालय में उगने वाली जड़ी-बूटियों के समान नही रहती है।

हिमालय के ऊचाई वाले स्थानों विशेषकर बद्रीनाथ, चमोली, कर्ण प्रयाग, रूद्र प्रयाग, गंगोत्री और केदारनाथ के आसपास **चन्द्रायणी** नामक एक विशेष लता उगती है। इस लता में अनेक तरह के विशिष्ट गुण रहते हैं। इस लता की जड़ का उपयोग स्थानीय निवासी हजारों सालों से अपनी बौद्धिक क्षमता बढ़ाने के उद्देश्य से करते आ रहे हैं। ऐसा देखने में आया है कि इस लता को कुछ दिनों तक सेवन करने से ही व्यक्ति में टेलीपैथी की क्षमता और दूरबोध की शक्ति उत्पन्न होने लग जाती है। वह व्यक्ति बिना किसी उपकरण के ही हजारों मील दूर तक अपने विचारों को किसी अन्य व्यक्ति के मन में पहुंचा सकने या उतनी दूर पर रह रहे किसी भी व्यक्ति के मन में उठने वाले विचारों को पढ़ने में सक्षम हो जाता है। चन्द्रायणी के सेवन से दूरदृष्टि के साथ-साथ उसमें भविष्य देखने की क्षमता भी विकसित होने लग जाती है। इसी प्रकार हिमालय के ऊपरी भाग में रूद्रवन्ती नामक एक विशेष प्रकार का पौधा भी पाया जाता है।

आधुनिक वैज्ञानिकों ने इस पौधे की पहचान केराकुलियस वर्ग के एक पौधे के रूप में किया है क्योंकि इसमें मिलता जुलता एक पौधा युरोप के जंगलों, विशेषकर जर्मन के जंगलों में देखा गया हैं। अब आवश्यकता यह है कि उत्तराखण्ड़ तथा हिमाचल प्रदेश में एक बनौषधि विश्व विद्यालय खुले जो शिक्षित वैद्यों को तथा किसानों को जड़ी-बूटियों के विषय में प्रशिक्षित करें तथा अनुसन्धान केन्द्र तथा प्रयोगशाला की स्थापना हो उसी के अन्तर्गत एकल वनस्पतियों से रोग ठीक करने का हर्बल हास्पिटल खोला जायें। समस्त वनौषधिवाटिकाएँ उस विश्व विद्यालय से सम्बन्धित हों। हमे मिल जुल कर हर हालत में वनस्पतियों की सुरक्षा करनी है और अधिक से अधिक वनौषधिवाटिकाएँ स्थापित करनी हैं।

आयुर्वेद विश्वपरिषद् धामाचार्य धन्वन्तरि पीठाधीश्वर परमंहस श्री श्रीधर स्वामी जी के कृतज्ञ है जो उन्होनें आश्रम परिसर में वनौषधिवाटिका की स्थापना की है। इन जड़ीबूटियों के कारण आयुर्वेद का प्रभाव बढ़ेगा।

यह धन्वन्तरिधाम आयुर्वेद का महत्वपूर्ण स्तम्भ सिद्ध होगा। यहाँ पर जो विश्वविज्ञान आयुर्वेद शोध संख्या धन्वन्तरि वाटिका मुगराबादशाहपुर (जौनपुर) एवं आयुषविकास परिषद् लखनऊ 30 प्र. के पदाधिकारी तथा सदस्य तथा अन्य आयुर्वेदज्ञ, उपस्थित हुए है। सबको धन्यवाद देता हूँ।

वनौषधियों का प्रयोग कर्मकांड, ज्योतिष, तंत्र में भी किया जाता है वनस्पतियाँ बहुत व्यापक हैं जैसे :-

कर्मकांड : विष्णु को तुलसी, शिव को वेलपत्र, धतूर, विजया गणेश को दूर्वा, जामुन, कपित्थ, शीतला देवी को नीम पत्र, दुर्गा को नीलकमल अनार, पालक, गेंहू जव का जबारा (अंकुर), लक्ष्मी को लाल कमल, कमलगट्टा लाल चन्दन, गुड़हल, सरस्वती को ब्राहमी, शंखपुष्पी, बरूण के लिए नारियल, आम्रपत्र, सूर्य को श्वेतार्क सहिंजना के फूल चन्द्रमा को चमेली पुष्प, श्वेतगुंजा हनुमान जी को केसर, मेंहदी लेप कचनार के फूल, भैरव जी को गूगल, काले तिल कनेर के फूल, मधु समर्पित करने का विधान है।

ज्योतिष :

1. सूर्य की शांति के लिए बिल्व (बेल) की जड़ रविवार को लेकर गुलाबी डोरा से बांधो।
2. चन्द्रमा की शांति के लिए खिरनी की जड़ सोमवार को सफेद ऊन के डोरे से बांधे।
3. मंगल के लिए अनन्तमूल की जड़ मंगलवार को लाल ऊन के डोरे से बांधे।
4. बुधशान्ति के लिए बिधारा की जड़ बुधवार को हरे ऊन के डोरे से बांधे।
5. गुरू (बृहस्पति) के लिए भारंगी या केले की जड़ गुरूवार को पीले डोरे से बांधे।
6. शुक्र की शान्ति के लिए शरपुखा की जड़ को शुक्रवार को सफेद डोरे से बांधे।
7. शनि की शान्ति के लिए बिच्छू जड़ शानिवार को काले डोरे से बांधे।
8. राहु की शान्ति के लिए सफेद चन्दन की जड़ बुधवार को नीले डोरे से बांधे।
9. केतु के लिए असगन्ध की जड़ बुधवार को पीले डोरे से बांधे।

(इनके ताबीज बनाकर भी धारण कर सकते है) नक्षत्रों के आधार पर रोगोत्पत्ति तथा वनस्पति प्रयोग भी बताया गया है। रत्न विज्ञान में रत्नों की प्रतिनिधि वनस्पतियों का पहनना भी बताया गया है। ग्रह नक्षत्रवाटिका लगाने का विधान भी है किस नक्षत्र में कौन सी वनस्पति लगाई जाये। इसके गुणवत्ता बढ़ जाती है।

10. तंत्र विज्ञान : (एक उदाहरण) जिस दिन रविवार तथा पुष्य नक्षत्र हो उससे एक दिन पहले अपामार्ग के पास जाकर रोली अक्षत्र से उसका पूजन करें तथा लाल मौली बांध आये। रविवार को जाकर मौली सहित जड़ को उखाड़ कर ले आये। प्रत्येक रोग दूर करने का सामर्थ्य उसमें आ जाता है। उसे हाथ में भी बाँध सकते हैं। विषाणु का भय भी नही रहता। स्वास्थ्य की वृद्धि होती है। औषधियों को शुक्ल पक्ष के आखिरी दिनों में उखाड़ना चाहिये क्योंकि उनमे सोमरस का प्रवेश हो जाता है। श्री कृष्ण ने भी गीता में कहा है :

पुष्णामि चौषधी : सर्वाः, सोमोभूत्वा रसात्मकः

वनौषधियों अन्तश्चेतन हैं विधाता ने चेतन प्राणी की स्वास्थ्य रक्षा के लिए पैदा की है। अतः जब औषधनिर्माण या सेवन के लिए उखाड़ना चाहे तो एक दिन पूर्व उनकी पूजा कर आमंत्रित करके आयें कि आप हमारी प्राणरक्षा स्वास्थ रक्षा करें, दूसरे दिन उखाड़ लाये। नीचे लिखा मंत्र पढ़े :-

वैतालाश्चपिशाचाश्च, राक्षसाश्च सरीसृपाः
अपसर्पन्तु ते सर्वे, वृक्षादस्मात् शिवाज्ञया ।१।
नमस्तेऽमृतसम्भूते, वलवीर्यविवर्धिनि।
बलमायुश्च में देहि, पापात् मांत्राहि दूरतः ।२।
येनत्वांरवनति ब्रहमा, येनत्वांरवनति भृगुः।
येन देवेन्द्रवरूणौ, येनत्वामपचक्रमे ।३।
तेनाहंच खनिष्यामि, मंत्रपूतेन पाणिना।
स्वयं पातय स्वं शीघ्रं, माते तेजोऽन्यथाभवेत् ।४।
अत्रैव तिष्ठ कल्याणी, मम कार्यकरी भव।
मम कार्ये कृते सिद्धे, ततः स्वर्गंगमिष्यासि ।५।

आयुर्वेद अवतरण तथा वनौषधिसूक्तियाँ

यत्रौषधीः संगमत, राजानः समितिविव।

विप्रः स उच्यतेभिषक् रक्षोहाभीवचातन (ऋग्वेद 10-97-6) जिसके पास वनस्पतियों का संग्रह तथा ज्ञान है वही रोगनाशक वैद्य है। शंतवो अम्बधामानि सहस्त्रमुत वो रूहः (यजुर्वेद 12-76) हे माता वनस्पतियों तुम्हारे अगने के हजारों स्थान है हमें आकर आरोग्य प्रदान करो। ऋतुसन्धिषुप्रयुज्यन्ते। (शतपथ) ऋतुओं की सन्धियों में रोग उत्पन्न होते हैं उस समय भैषज्यज्ञ करें।

आयुर्वेदामृतं सर्व ब्रहमा बुध्वा सनातनम्।

ददौ दक्षाय सोऽश्विभ्यां तौ शतक्रतवे तथा (वृद्धवाग्भट) आयुर्वेद रूपी अमृत ब्रहमाने दक्षप्रजापति को दक्ष ने अश्विनी कुमारों को कुमारों ने इन्द्र को पश्चात् इन्द्र ने ऋषि भारद्वाज को दिया । महर्षि चरक ने भी ऐसा ही वर्णन किया है। आयुर्वेद ऋषियों के आश्रमों में पला, फैला अतः आश्रमों, मठों से पुनः आयुर्वेद तथा वनौषधियों का विस्तार होना चाहिए।

WORLD ACADEMY OF AYURVED

In 1956, on the auspicious occasion of Dhanvantri Jayanti, a meeting was held in the Universal Health Research Institute and Hospital, Lamingtan Road, Bombay which was attended by World Ayurveda laureates Pt. Shiv Sharmaji; Director of Ayurved Maharashtra Government, Pt.Hari Datt Shashtri; Head of Sanskrit and Ayurved Departments of Bhartiya Vidya Bhawan, Bombay, Acharya Prabhakar Mishra; Renowned doctor of Ayurveda Pt. Suresh Prashad Chaturvedi and Pt. Ram Gopal Vaidya, Acharya of Punarvasu Ayuvidyalaya, Bombay. In this meeting, decision was taken to provide benefits of the oldest science of life to the world. In order to achieve this objective and all-round Research and Development of Ayurveda, there is need of creating a world organization. In this meeting unanimous decision was taken to name the organization as **World Academy of Ayurved**. Vaidya Haridatt Shashtri, Director of Ayurveda, Maharashtra presented the draft constitution of the Academy. Pt. Shiv Sharma made some additions and alterations and finally decided to get it registered under societies Registration Act. It was also decided that Academy should be legally instituted. Dr. K. M. Munshi, former Governor of Uttar Pradesh and then law Minister in Central Government and founder of Bhartiya Vidya Bhawan also Chairman of World Sanskrit Academy organized World Sanskrit Conference on 11-12 January, 1957 in Kurukshetra (Hariyana) Dr. K.M. Munshi permitted the inauguration of the World Academy of Ayurveda and on 12th January 1957 in Kurukshetra under the able patronage of the then president of India Dr. Rajendra Prasad Ji, The World Academy of Ayurveda was inaugurated by Kaviraj Pratap Singh ji, the first Advisor of Ayurveda, Government of India. At that time galaxy of Ayurvedacharyas were present. Among others the names of Dr.Satya Ketu Vidyalankar Education Minster of Punjab: Vaidya

Ashutosh Majumdar, Registrar Indian Medicines Board Delhi; Vaidya B . N Sarkar need to be mentioned. Acharya Prabhakar Mishra, Convenor high lighted the objectives of the World Academy of Ayurveda. Pt. Shiv Sharma was nominated as First President of the Academy. Pt. Haridatt Shashtri and Vaidya Ashtosh Majumdar were nominated as Vice Presidents and Prabhakar Mishra was nominated as General Secretary of the Academy. Various Confrences, Seminars, Camps and symposiums were organised from time to time . During the Maha Kumba Mela 2010 Haridwar a committee was constituted in order to popularise Ayurveda general knowledge among the students. For this, syllabus was prepared and the students of schools and colleges will be taking part in Ayurveda general knowledge examinations. The present Chairman of the Academy Acharya Prabhakar Mishra visited Nepal, U.S.A., UK, Canada, Thailand, Brazil, Peru, Switzerland, Moritius, and African countries where he propagated the principles of Ayurveda. As a result, now the Ayurveda is recognized at the world level .The people are now attracted towards Ayurveda. So much so the World Health Organization (WHO) now strongly favours the maintenance of the good health by Ayurveda Actually Ayurved could not get the right leadership, in India, since the Ayurvedacharyas remain busy in teaching and medical practice and they do not get chance towork at world level.

However, we are hopeful that by mid of the century, the World Academy of Ayurved is commtitted to take Ayurved globally.

President's Office :- C-121, Kirti Nagar, New Delhi- 110015.
Mob.: 09818066603, E-mail : waayurved@gmail.com
Web site : www.waayured.org
Mobile : 09818066603

श्री धन्वन्तरि अखाड़ा ध्वजवंदना

लहराती है उच्च पताका धन्वन्तरि भगवान् की।
आयुर्वेद-प्रवर्तक जग में भारत देश महान् की।
परम पावनी भारत भूमि, जनमन को हरषाती है।
वेद संहिता और देवता, ऋषिमुनियों कर धरती है।
शस्य श्यामला सुजला सुफला हरे भरे परिधान की।
लहराती है उच्च पताका धन्वन्तरि भगवान् की। भारत देश महान् की।
नदियां इसकी अमृतमयी है, लहर-लहर बल खाती है।
आगे आगे बढ़ती चलती, सागर मध्य समाती है।
औषधियां वरदान सभी के जीवन स्वास्थ्य महान की।
लहराती है उच्च पताका धन्वन्तरि भगवान् की। भारत देश महान् की।
इस सागर से लेकर प्रकटे जय धन्वन्तरि भगवान् हैं।
सुधा कलश है जिनके कर में, साथ वेद विज्ञान है।
आधि-व्याधि अरू कष्ट निवारक, देव मनुज सन्तान की।
लहराती है उच्च पताका धन्वन्तरि भगवान् की। भारत देश महान् की।
आओ हम सब अमृत कलश से सुधा-पान कर ध्यान से।
वसुधा को अमृतमय कर दें, इस आयुर्विज्ञान से
पुण्य भूमि यह जग की जननी ज्ञान और विज्ञान की।
लहराती है उच्च पताका धन्वन्तरि भगवान् की। भारत देश महान् की।
दीन दुखी रोगी जन जग के स्वास्थ्य श्रेष्ठ सब पायेंगे।
नयी शक्ति अरूनयी चेतना, पाकर हर्ष मनाएंगे।
यही ध्येय हो एक हमारा, फैले गरिमा ज्ञान की।
लहराती है उच्च पताका धन्वन्तरि भगवान् की। भारत देश महान् की।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वेभद्राणि पश्यन्तु, माकश्चित् दुःख भाग् भवेत्।।



वितरक : सार्वभौम सनातन धर्म महासभा (रजि0)
C-121, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015 (भारत)

मुद्रक : राजपाल प्रेस,
1-B/60, रमेश नगर, नई दिल्ली-110015